"लाला बाबू सब आपका ही दिया तो खते हैं, तकल्लुफ की बात नहीं है, आज इन सब सबको पिलाकर लाया हूं। ज्यादा पी लेने से बाज औकात काम बिगड़ जाता है।" और उसने बोतल उठाकर किनारे की तरफ डाल दी।

आज इन बोतलों में जैसे बिलकुल जान नहीं रह गई थी। काली बाबू ने देखा वह धार पर अंगुठा इस तरह रगड़ रहा था जैसे उसकी धार की तेजी नाप रहा हो। उन्होंने सोचा उनकी गर्दन के हिसाब से लाया है। तले की धरती खिक गई, माथे पर पसीने की बूंदें साफ नजर आने लगी। सोचा फोन पर पुलिस को बुला लूं मगर फिर ख्याल आया - पुलिस के आने से पहले ही यह रमपुरिया उसकी गर्दन में पार कर देगा।

"तो तुम क्या जा रहे हो न !"

"जाना कहां-कहां है काली बाबू?कौन हजारों तगादे बाकी रहते है?दस पांच घर लगे बंधे हैं, खुदा उन्हींसे सूखी रोटियां दिलवा देता है। आज जब बहुत तंगी हुई तो सोचा चालो कहीं जाकर वसूल किया जावे। क्या बतायें लाला बाबू, यह धंधा ऐसा है कि कितना ही कमाओं कुछ नजर ही नहीं आता। बाल-बच्चे हमेश दूध के लिये तरसते ही रहते हैं।"

"हां ! तुमने शराब वाले का हिसाब नहीं बतलाया।"

"जो समझो दे देना। आप से तो आपस का मामला है। मैने तो कभी आपसे आज तक कोई बात तै नहीं की । मैं तो इन लोगों को खाली मुलाकात करवाने के लिये लाया था। लाला बाबू पेट इतना जालिम चीज है कि आदमी भूखा भी तो नहीं सो सकता। मैने सोचा रमपुरिया दिखाने से ही अगर मतलब हो जाये तो क्या फायदा जो किसी का ज्यादा नुकसान करूं। फिर आप ही बतायें इसके अलावा और हमारे पास चारा ही क्या है। न लिखे न पढ़े। बस ! वख्त पड़ने पर इसी का सहारा है।"

छुट्टन ने फिर धार पर अंगूठा फेरा, बड़े गौर से देखा और उसे जब बिलकुल असली मालुम पड़ा तो जरा मुसकराया - वाकई धार बहुत तजे है। फिर आधा बन्द कर दिया। सहन के दरवाजे से किसी ने कपड़े में लिपटी, कोई चीज लाकर दी तो छुट्टन ने फिर चाकू पूरा खोल दिया। धार पर अंगूठा फेरा, ऐसा महसूस हुआ जैसे तेजी पहले से कुछ कम न हो गई हो, मगर इससे कोई फर्क नहीं पडता। लोहा तो वही है।

"बोतल वाले ने बिल दे दिया है।' - छुट्टन ने बंडी की जेब से वह पर्चा आगे बढ़ा दिया।

काली बाबू ने पीछे मुड़कर देखा, खून के धब्बे वाले कागज पर किसी ने टेढ़े-मेढ़े लफ्जों में लिख रक्खा था।

'१००० बोतल,, कीमत - १० रूपया फी बोतल।' उन्हे लकवा सा मार गया। वहीं गद्दी पर बैठे रहे। कनखियों से देखा छुट्टन धार पर उसी तरह अंगूठा फेर रहा था।

"भिजवा देना लाला बाबू - कोई अफ्त थोड़े ही है।"

"नहीं भाई, हाथ की हाथ लेते जाओ, मैं बाहर जाने वाला हूं, पता नहीं कब जाना हो? हाथ की हाथ सारा काम खत्म हो जावे ज्यादा अच्छा है।"

"बांके बिहारी जी, छै सागापाई वाली ले आना।"

"लाला बाबू वह पुलिस-पुलिस करता है। पकड़वा देगा, मर जाऊँगा, हिसाब पूरा कर दो नहीं तो फिर जाना पड़ेगा।"

मुनीम जी सांग की दस ले आइयेगा। नाक पर काला चश्मा चढ़ा कर वहीं लेट गये। कनखियों से देखा - छुट्टन आयेस्ता-आयेस्ता रमपुरिया बन्द कर रहा था।

मुनीम ने गड्डियां फेंकते हुये कहा -

छुट्टन यह लाला जी का दोष नहीं है। इंसानों की नस्लों में, इंसान की एक नस्ल ऐसी भी है, जो मरे हुये आदमियों की हड्डियों और गोश्त का भी व्यापार करती है। यह लाला उन्ही चीजों का व्यापार करता है। हर साल एलेक्शन जीत जाने के बाद यह गरीबों को अनाज के एक-एक दाने के लिये मोहताज कर देता है। और जब मंच पर खड़े होने का वक्त आता है, यह इंसान उन गरीबों के आगे आंसू बहा-बहा कर अपनी सच्ची मोहब्बत का ऐसा नाटक रचाता है कि उनका दिल पसीज उठता है।

रोटियों की कमी से जब मांस हड्डियों से चिपकने लगता है, लाला उन लोगों को चिकवे के यहां भेज कर हलाल करवा देता है इसके बाद सीलबन्द डिब्बों में उनका मांस और बड़े-बड़े शकर और गेहूं के बोरों में उनकी हड्डियों को ट्रकों पर लाद कर दूसरी मंडियों को भेज देता है। जहां उसे ब्लेक का माल कह कर बेच दिया जाता है।

और उसने एक झटके के साथ शीशे का वह पल्ला पीछे ढकेल दिया, जिसे देख कर काली बाबू रोज अपने सफेद बालों में काला खिजाब लगाता था। देख लें ! छुट्टन देख ! "आज भी इस सिंहासन के नीचे गेहूं और शकर के हजारों बोरे अपनी आंखों में आंसू लिये सिसक रहे हैं।"

मुनीम जी, घबराओ नहीं - लाला ने आज छुट्टन का यह रमपुरिया देख लिया है, लाला अब कभी ऐसा नहीं कर सकता है। छुट्टन को हमेशा से इंसान की जिन्दगियों से प्यार रहा है।

उसने देखा काली बाबू अब भी माथे का पसीना पोंछे जा रहा था।

लाला बाबू ! गेहूं के बोरे कल ही बाजार में भिजवा देना जहां छुट्टन अपने हाथ से गरीबों में बांट देगा। नहीं तो छुट्टन को इन्हे लेने फिर आना पड़ेगा।

चल ! उठ बे, रमजानी ! काम हो गया, बेकार बैठने से क्या फायदा ! धंधे वाला अभी भी माथे का पसीना पोंछे .....।

❖❖ ❖❖ ❖❖ ❖❖ ❖❖